प्रकाशक :—
कृष्णदास गांधी
मंत्री, अखिल भारत चरखा संघ,
सेवाग्राम

पहली बार :—२०००
मूल्य —आठ आने

बापू की खादी

कल्पना का मूल :—हिन्दुस्थान के राष्ट्रीय आन्दोलन में खादी का स्थान विशेष महत्वपूर्ण है। खादी के द्वारा हमारी राष्ट्रीयता को अेक नया रूप मिला है और अुसका असर हिन्दुस्थान के राजकीय, आर्थिक तथा सामाजिक जीवन पर अंकित हो गया है।

खादी भावना का प्रारंभ स्वदेशी आन्दोलन से होता है। हम देखते हैं कि कांग्रेस की स्थापना के पूर्व से ही स्वदेशी भावना का अुदय देश के नेताओं के अन्दर हो चुका था। दादाभाओ नौरोजी, न्यायमूर्ति रानडे आदि नेताओं के ध्यान में यह बात आ चुकी हुँ थी कि देश की गुलामी और गरीबी को दूर करने के लिये देश के अुद्योग-धंधों को जिलाने की कोशिश करनी चाहिये। स्वदेशी की यह भावना, बंग-भंग के कारण बहुत प्रबल हो गयी। फलतः १९०५ की कलकत्ता कांग्रेस में विलायती माल का बहिष्कार और स्वदेशी माल को अुत्तेजन देने का प्रस्ताव पास हुआ। विलायती माल के बहिष्कार की भावना का आधार मिलते ही स्वदेशी आन्दोलन देश में चारों ओर फैल गया और देश में बनी चीजें अिस्तेमाल करने की ओर लोगों की प्रवृत्ति बढ़ी।

कपड़ा रोजमर्रा की सब चीजों से ज्यादा महत्व का होने के कारण और सब से ज्यादा ब्रिटेन से अुसी की आयात होने के कारण, ब्रिटिश माल के बहिष्कार का प्रधान लक्षण ब्रिटिश कपड़ा ही हुआ। देश में

स्वदेशी कपड़ा तैयार करने की ओर लोगों का ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट हुआ, अुसके लिये हाथ करघे के धंधे को पुनुरुज्जीवित करने का भी प्रयत्न होने लगा। स्वदेशी भावना का लक्ष्य अुस समय देश में बड़े-बड़े कारखाने खोलने व यांत्रिक औद्योगीकरण करने की ओर ही विशेष रूप से था। दूसरी ओर ग्रामीण अुद्योग-धंधों को तथा हस्तकला को पुनुरुज्जीवित करने की दृष्टि भी लोगों में जागृत हुअी थी। लेकिन कल-कारखानों के सहचारी भाव क्या होते हैं, अुसमें देश की क्या हानि होती है, अुससे जनता की पंगुपन की वृद्धि होने से किस कदर वे बेहोश तथा असहाय हो जाते हैं और अुस कारण, चाहे जितना आदर्श लोक-सत्ता का विधान बनाता हो, जनता हमेशा ही किसी वर्ग या दल की मुट्ठी में रहती है, अिसका स्पष्ट चित्र अुस समय के जननायकों को नहीं था। अतः स्वदेशी की बुनियाद गृह-अुद्योगों पर रखने का आग्रह विशेष रूप से नहीं रहा।

अिसकी स्पष्ट भावना अुस समय अकेले गांधीजी को ही थी। अुन्होंने केन्द्रीकरण का अिन्द्रजाल क्या है, अुसे भली भांति समझ लिया था। अुन्होंने अुसी समय समझ लिया था कि कल-कारखानों की बाढ से हिंदुस्थानी जनता शायद विदेशी कब्जे से मुक्त हो सकेगी, लेकिन अुन्हें सच्चा स्वराज्य नहीं मिल सकेगा। किस तरह चरित्र खोकर पैसेदार बनी हुअी जनता कभी स्वतंत्र नहीं हो सकती है, यह विचार गांधीजी ने दक्षिण-अफ्रिका में लिखी हुअी अपनी "हिन्द स्वराज्य" नामक किताब में आज से ४२ वर्ष पहिले प्रकट किया था। आगे चलकर चरखे का जिक्र भी अिसी सिलसिले में अुसमें आया है।

चरखे का अुदय :—गांधीजी ने मौजूदा केन्द्रीय अुद्योगवाद की विभीषिका को समझ कर अुसके बदले में विकेन्द्रित, स्वावलंबी तथा संयमी

समाज व्यवस्था की कल्पना में चरखे की बात भी सोच ली थी। लेकिन चरखे की प्रत्यक्ष धारणा अुनको नहीं थी। वे अुस समय करघे को ही चरखा समझते थे। और दक्षिण-अफ्रिका से हिन्दुस्थान लौटने पर गांधीजी ने ज्य गुजरात में अहमदाबाद में आश्रम चालू किया तब आश्रम में करघे ही दाखिल किये गये। करघे के लिये सूत तो मिल का ही था। हाथ का सूत निर्माण करने की फिक्र में वे क्यों और कैसे पडे अिसका रोचक वर्णन आत्मकथा में "खादी का जन्म" तथा "चरखा आखिर मिल गया" अिन शीर्षक वाले दो अध्यायों में स्वयं गांधीजी ने दिया है।

चरखे आश्रम में दाखिल होने पर सूत कातने, रुअी धुनने, पूनी बनाने आदि की क्रियाएं आश्रमवासियों ने अेक-अेक करके सीखना शुरू किया। अुनमें सुधार करने की ओर गांधीजी खुद ध्यान देने लगे। हाथ बुनाअी के सुधार-संशोधन में श्री मगनलाल गांधी, गांधीजी के दाहिने हाथ रहे और अुनके परिश्रम से खादी क्रियाओं में तथा चरखे आदि औजारों में काफी प्रगति हुअी। अुस समय गांधीजी का आश्रम खादी की अेक प्रयोगशाला बना हुआ था।

स्वराज्य की बुनियाद चरखा :—सन १९२० तक खादी का यह काम गांधीजी के आश्रम तक ही मर्यादित था। अुसके बाद भारतीय *राजनैतिक क्षेत्र में धूमकेतु जैसा गांधीजी का आविर्भाव हुआ। सारा राष्ट्र* गांधीजी के नेतृत्व के नीचे आया। अुसी समय से गांधीजी ने चरखे को राजनैतिक आन्दोलन की बुनियाद माना। अुन्होंने देश भर में घूम-घूम कर "चरखे से-स्वराज्य" का नारा बुलन्द किया। सारे देश ने अेक स्वर से अिस नारे को दुहराया। फलस्वरूप भारत की राजनैतिक संस्था कांग्रेस ने भी चरखे को स्वातंत्र्य संग्राम की रीढ के तौर पर स्वीकार किया।

असहयोग के वे दिन जबरदस्त हलचल के थे। लोगों को विलक्षण अुत्साह था। गांव-गांव में काँग्रेस कमेटियों द्वारा खादी का प्रचार होने लगा। काँग्रेस की सदस्यता का चंदा सूत के रूप में लेने का भी प्रस्ताव पास हुआ। काँग्रेस के अिस निर्णय के अनुसार देशभर में काँग्रेस कमेटियों द्वारा चरखे चालू किये गये, खादी तैयार हुअी और अुसकी बिक्री आदि का काम भी चालू हुआ। स्वराज्य प्राप्ति के आन्दोलन का "खादी" अेक महत्वपूर्ण अंग बन गयी तथा राष्ट्रीय झंडे पर चरखे का चित्र अंकित करके चरखे को स्वातंत्र्य के प्रतीक के रूप में देश ने स्वीकार किया। काँग्रेस के अधिवेशनों में खादी को लोकप्रिय बनाने और अुसकी जानकारी देने की दृष्टि से प्रदर्शनियों का आयोजन भी अुसी वक्त से शुरू हुआ।

१९२१ में देशभर में राष्ट्रीय शिक्षण के विद्यापीठ, विद्यालय तथा आश्रम कायम हुअे। अिन सब शिक्षण संस्थाओं ने अपने-अपने विद्यार्थियों को खादी की शिक्षा दी। अिस प्रकार शिक्षा प्राप्त नौ-जवानों ने देशभर में खादी का संदेश फैलाया।

सही स्थिति का बोध :—१९२१ के असहयोग आन्दोलन के दिनों में जोश में देश के सभी लोगों ने खादी कार्यक्रम को अपनाया। लेकिन यद्यपि स्वदेशी आन्दोलन से अिस बार खादी की आवश्यकता का भान लोगों में अधिक था, फिर भी गांधीजी की धारणानुसार खादी की आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि सब लोगों में नहीं थी। आन्दोलन के जोश में लोगों की रुझान चाहे जो हो, सारे देश में तथा काँग्रेस में चरखे के क्रान्तिकारी पहलुओं की स्पष्ट दृष्टि न रहना स्वाभाविक ही था। वस्तुतः जब तक अंगरेज हमारे मुल्क पर राज करते रहे तब तक हमारा आन्दोलन अेक संयुक्त मोर्चा सा बना रहा है। भारत के सभी तबके के

लोगों के लिये अंग्रेजी राज्य समाप्त करना अिष्ट था। अतः अिस आन्दोलन में पूंजीपति, संभ्रांत वर्ग, संप्रदाय वादी, मार्क्सवादी, गांधीवादी और शुद्ध राष्ट्रवादी सभी थे। पूंजीपति देखते थे कि जनता के शोषण का लाभ अधिकांश अंग्रेजों को मिलता है, अिसलिये अंगरेज चले जाने से पूरा हिस्सा अुन्हीं को मिलने लगेगा। अिसलिये वे चाहते थे कि अंगरेज जायँ। संभ्रान्त वर्ग के लोग देखते थे कि अुनसे कम विद्वान तथा संपत्तिवान अंगरेज समाज में रोब तथा प्रतिष्ठा का पूरा हिस्सा अपना रहे हैं, अतः कदाचित् अुनके लिये अंगरेज हटने पर यह रोब और प्रतिष्ठा प्राप्त हो, जिसकी पूरी आशा थी। संप्रदायवादी समझते थे कि अंगरेज हटने पर वे देश में हिन्दू राज्य स्थापित कर सकेंगे। अुसी तरह अंगरेजी राज हटने पर मार्क्सवादी या गांधीवादी के लिये देश में अपनी अपनी धारणानुसार समाज-व्यवस्था कायम करना आसान होगा, अैसा खयाल था। जो लोग शुद्ध राष्ट्रवादी थे अुनके सामने अेक ही अुद्देश्य था कि अंग्रेज यहां से हटें। हालां कि शुरू शुरू में अिन खयालों का भी स्पष्ट रूप लोगों के होश में नहीं था। अुस समय तो आजादी का नारा ही प्रधान था। बाद को धीरे धीरे प्रच्छन्न भावनाअें स्पष्टता के साथ लोगों के दिमाग में आने लगीं। अिस प्रकार अंगरेजी राज्य के दिनों में पृथक् अुद्देश्य होते हुअे भी कॉंग्रेस अेक सम्मिलित मोर्चा बनी हुअी थी। कॉंग्रेस के अेक मात्र नेता गांधीजी होने के कारण सब ही श्रेणी के लोगों को गांधीजी के चरखे को मान्यता देनी थी, क्यों कि गांधीजी का नेतृत्व पाने के लिये अितना मानना अुनके लिये जरूरी था।

अतअेव १९२३ में असहयोग आन्दोलन स्थगित होने के साथ साथ चरखे का प्रथम जोश ठंडा होना स्वाभाविक था। कॉंग्रेस विविध पक्षी लोगों की संस्था होने के कारण कांग्रेस कमेटियों द्वारा खादी का काम चल नहीं सकता था। गांधीजी अुस समय जेल में थे। अिसलिये जो

लोग गांधीजी की धारणानुसार चरखे के माध्यम से ही जनराज्य स्थापित हो सकता है असा मानते थे अुनके लिये अेक विकट परिस्थिति खडी हुअी। वे कांग्रेस से बाहर भी नहीं आ सकते थे और कांग्रेस द्वारा खादी का ध्येय पूरा हो सकेगा असी आशा भी अुनको नहीं थी। कांग्रेस के दूसरे लोग भी खादी के अंतिम ध्येय के बारे में सहमत न होते हुअे भी राष्ट्रीय आन्दोलन संचालन के हेतु जनसंपर्क कायम रखना, विदेशी वस्त्र का बायकाट करना, गांधीजी का नेतृत्व प्राप्त करना आदि कअी कारणों से खादी को छोड नहीं सकते थे।

अखिल भारतीय खद्दर बोर्ड :— अुपरोक्त परिस्थिति को सामने रखकर कांग्रेस ने यह महसूस किया कि खादी के काम को व्यवस्थित करने के लिये अेक बोर्ड बनाया जाय जिसके द्वारा खादी का काम ठीक से चल सके। फलतः १९२३ में कोकोनाडा कांग्रेस ने अखिल भारतीय खद्दर बोर्ड की स्थापना की, और अुसके जिम्मे खादी का सारा काम दिया गया गया। अिससे पहिले देश भर में कांग्रेस कमेटियों द्वारा जो खादी का काम चल रहा था अुस सब की जिम्मेदारी खादी बोर्ड पर आयी।

बोर्ड ने खादी काम को संगठित रूप देना शुरू किया, खादी अुत्पत्ति केन्द्र और खादी भंडार जगह जगह चालू किये गये, वस्त्र-स्वावलंबी होने की दिशा में लोगों को अुत्तेजित किया गया तथा कुछ खादी साहित्य प्रकाशन का काम भी हुआ।

अखिल भारत चरखा संघ :— दूसरे ही साल गांधीजी जेल से मुक्त हुअे। अुन्होंने देखा कि खादी बोर्ड कांग्रेस की अेक समिति जैसा होने के कारण अुसकी दृष्टि स्पष्ट होना संभव नहीं है। कुछ दिन कांग्रेस के जरिये अपना काम कर अुन्होंने यह भी महसूस किया कि कांग्रेस

केवल राजकीय आजादी का ही काम कर सकती है। अुसके द्वारा अहिंसक समाज रचना की दिशा में मौलिक क्रांति का आयोजन करने की आशा अुन्हें नहीं रही। अतः आवश्यकता अिस बात की थी कि देश में कोअी अैसा संगठन कायम हो जिसके द्वारा गांधीजी आर्थिक तथा सामाजिक क्रांति का प्रयोग कर सकें। कांग्रेस का रूप अेक सर्वदलीय राष्ट्रीय संस्था का सा था। गांधीजी ने अैसे संगठन को कांग्रेस के अंतर्गत रखने का ही सोचा जिससे कि अेक दूसरे की प्रतिक्रिया से दोनों शक्तिशाली हों।

अतः गांधीजी की सलाह के अनुसार अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने अपनी २३ सितम्बर १९२५ की बैठक में "अखिल भारत चरखा संघ" की स्थापना की। वह प्रस्ताव अिस तरह है।---

"चूंकि हाथ से कातने की कला और खादी का विकास करने के लिये अुसके विषय की जानकारी रखने वाली संस्था स्थापित करने का समय आ पहुँचा है, और चूंकि अनुभव से यह सिद्ध हो चुका है कि राजनीति, राजनैतिक अुथल-पुथल और राजनैतिक संस्था के नियंत्रण तथा प्रभाव से दूर रहने वाली संस्था के विना अैसा विकास नहीं हो सकता है अिस लिये अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की स्वीकृति से अिस प्रस्ताव द्वारा कांग्रेस संगठन के अंतर्गत, किन्तु स्वतंत्र अस्तित्व और सत्ता रखनेवाली 'अखिल भारत चरखा संघ' नाम की संस्था स्थापित की जाती है।"

अखिल भारत चरखा संघ की स्थापना से खादी की प्रगति में अेक निश्चित बल मिला, और अुसने तेज कदम आगे बढाना शुरू किया। अुस वक्त देश भर में अेक निराशा छाअी हुअी थी। राजनैतिक नेताओं का भरोसा जन-शक्ति पर नहीं रहा, अतः अुन्होंने असहयोग की नीति अेक तरह से छोड ही दी थी, और कौंसिल के प्रोग्राम को अपनाया था। अैसी दशा में चरखा संघ की स्थापना से देश की जनता में नवीन

आशा का संचार हुआ। अुन्हें गांधीजी के नेतृत्व में अेक मजबूत संस्था तथा सक्रिय योजना मिल गयी, और वे निरंतर अुन्हीं के बीच में रहकर अुनमें शक्ति संचार का काम करने लगे।

तीन काल विभाग :— चरखा संघ तथा खादी के तीन काल-विभाग हो सकते हैं।

(१) १९२५ से १९३४ तक—खादी प्रसार काल।
(२) १९३५ से १९४४ तक—निर्वाह वेतन काल।
(३) १९४५ से —नवसंस्करण काल।

अिन तीनों काल खंडों पर विचार करने से खादी व चरखा संघ की प्रगति का पूरा चित्र हमारे सामने आ सकेगा।

(१) खादी प्रसार काल :—अिस काल में खादी के कार्य का विशेष लक्ष्य यह रहा कि सस्ती से सस्ती खादी बनायी जाय और अिस सस्तेपन से खादी की बिक्री को बढाया जाय। खादी कार्य के शुरू में, कताओ, बुनाओ तथा तत्संबंधी क्रियाओं का टेकनिकल ज्ञान कार्यकर्ताओं को नहीं के बराबर था। अिसलिये शुरू शुरू में जो खादी तैयार हुअी वह बहुत मोटी खुर्दरी तथा देखने में भद्दी और टिकने में कमजोर होती थी। घर-घर कंधे पर ले जाकर, ग्राहकों को मनाकर नेता अुन्हें बेचते थे। भूतदया की दृष्टि से खादी खरीदने का लोगों में प्रचार किया जाता था। "खादी, अंधों की लकड़ी, भूखों की रोटी और विधवा का सहारा है"— स्वर्गीय जमनालाल बजाज का यह वाक्य अुसी जमाने का है। अुस समय जो मजदूरी दी जाती थी अुससे अेक कत्तिन दिनभर कताओ करके तीन से चार पैसे तक कमा पाती थी। अुन दिनों देश की व्यक्तिगत दैनिक

औसत आमदनी केवल सात पैसे थी। तब कत्तिनों को दूसरे काम के अभाव में ४ पैसे रोज भी मिलें यह कम महत्व की बात नहीं थी। अिससे लाखों बेकार स्त्रियों को काम मिलने लगा। खादी की अुत्पत्ति बढ़ी और धीरे-धीरे कपड़ा अच्छा बनने के कारण बिक्री की समस्या भी कुछ कम हुअी।

अिसके बाद १९३० का सत्याग्रह आन्दोलन आया। आन्दोलन के कारण खादी की मांग बढ़ी। अिससे अुत्साहित होकर चरखा संघ ने काम बढ़ाया। यह समय मंदी का था। अिसलिये लोगों की ओर से खादी और सस्ती बनाने की मांग थी। चरखा संघ भी अच्छी और सस्ती खादी बनाने की कोशिश करता रहा जिसके फलस्वरूप भंडारों में ३२" अर्ज की खादी तीन आने गज तक बेची जा सकी। मतलब यह कि खादी की कुछ किस्में, सस्ताअी में, मिल के कपड़े की बराबरी करने लगीं। अिस कारण भी खादी के प्रसार में बल मिला।

निर्वाह वेतन काल :—खादी को सस्ता करने के प्रयास ने अुसके अिस्तेमाल करने का प्रसार तो जरूर किया, किन्तु अुस प्रसार ने अेक दूसरी समस्या खड़ी की ? —और वह थी कामगारों की मजदूरी में कमी। यद्यपि कार्यकर्ताओं ने खादी को सस्ता बनाने की धुन में, अिस समस्या की अहमियत को नहीं समझा, लेकिन गांधीजी के ध्यान में यह बात फौरन आयी।

जेल से लौटते ही अुन्होंने देख लिया कि खादी गलत दिशा में जा रही है। खादी सेवक अुसे मिल की प्रतिद्वन्द्विता के आधार पर खड़ा करना चाहते हैं। लेकिन खादी का धर्म ही प्रतिद्वन्द्वितावादी समाज को मिटा कर सहकारी समाज की स्थापना है। अतः यह आवश्यक था कि

खादी को प्रतिद्वन्द्विता के दायरे से बाहर निकाल कर अुसके मूल सिद्धांत के आधार पर अुसे खडा किया जाय। अुन्होंने देखा कि अैसी स्थिति आ गयी है कि अगर खादी के नैतिक पहलू पर जोर देने का निश्चित कदम न रखा जावे तो वह, जब तक लोगों में अूपरी जोश है तब तक के लिये, अेक व्यापारी चीज के रूप में रह जावेगी और समय पाकर मर जावेगी। अतः गांधीजी ने सस्ती खादी बनाने की नीति का विरोध किया और निर्वाह मजदूरी का सिद्धान्त खादी पर लागू करने का नया विचार चरखा संघ के सामने रखा। निर्वाह मजदूरी का अर्थ यह है कि जिनसे हम काम करवाते हैं, फिर वह काम फुरसत के समय में भी क्यों न हो, अुन्हें अितनी मजदूरी देनी चाहिये कि जिससे काम करनेवालों का अपनी मजदूरी से भरण-पोषण हो सके। गांधीजी ने कहा कि अेक घंटे के काम के लिये कम-से-कम अेक आना मजदूरी चरखा संघ अपने कामगारों को दे। गांधीजी के अिस सुझाव से खादी-सेवकों में बडी घबडाहट हुअी। क्योंकि अुनको डर था कि अगर खादी के दर बढाये गये, तो खादी की बिक्री अेकदम कम हो जावेगी। फलतः कामगारों को अधिक मिलने के बजाय जो रोजी मिल रही है अुससे भी हाथ धोना पडेगा। लेकिन गांधीजी निर्वाह वेतन के सिद्धांत पर दृढ थे। अुनके सामने तात्कालिक लाभ-हानि का सवाल नहीं था। अुन्हें चरखा आन्दोलन को दिशाभ्रष्ट होने से बचाना था। खादी कार्य का मूल अुद्देश्य स्वावलंबी समाज रचना है। अगर चरखे के कार्यक्रम का हर कदम अुस अुद्देश्य की दिशा में नहीं अुठता है तो वह गांधीजी का चरखा नहीं है। स्पष्ट है कि अगर संसार में स्वावलंबी समाज की स्थापना करनी है तो हर मनुष्य को कम-से-कम मौलिक आवश्यकता के लिये अपने हाथ से अुत्पादन करना होगा। यह सही है कि प्रत्येक मनुष्य प्रत्येक चीज का अुत्पादन नहीं करेगा,

सहकारी समाज का यह अर्थ नहीं है। कुछ मर्यादित मान में श्रम-विभाग का अस्तित्व रहेगा ही। लेकिन गांधीजी के स्वावलंबी समाज का अर्थ है, शोषणहीन अहिंसक समाज। जिसका मतलब यह है कि सहकारी समाज व्यवस्था में श्रम-विभाजन की जो भी कल्पना हो अुसमें अितना तो अवश्य होना चाहिये कि श्रम का विनिमय-मूल्य समान हो। अगर कोअी व्यक्ति स्वावलंबन के लिये वस्त्र अुत्पादन नहीं करता है तो साफ है कि वह अुस समय कोअी दूसरा काम करता है। अिसलिये अुसको फुरसत नहीं है। अैसी हालत में अुतने समय में वह जो दूसरा काम करता है, अुससे अुसको जितना वेतन मिलता है, अुतना ही वेतन चरखा कातनेवालों को देना धर्म है। जो लोग गांधीजी की कल्पना के समाज में अपने काम की मजदूरी दूसरों के काम से प्रतिघंटा अधिक लगाने की चेष्टा करते हैं, वे शोषक हैं और अहिंसक समाज में अुनका स्थान नहीं है। अतः गांधीजी ने साफ कहा कि "खादी का काम जिन कामगारों की सेवा के लिये चलाया जा रहा है अुनको पेटभर खाना और तनभर वस्त्र नहीं दे सके तो हम अुनकी सेवा नहीं अुनका शोषण कर रहे हैं।" अन्त में १९३५ में चरखा संघ ने निर्वाह वेतन का प्रस्ताव स्वीकार किया। साथ-साथ अुसने संघ का ध्येय, हिंदुस्थान के हरेक परिवार को अुसकी वस्त्र संबंधी आवश्यकता खादी द्वारा पूरा करके अुसको वस्त्र-स्वावलंबी बनाना है, अैसा स्पष्ट कर दिया गया। अिस समय से चरखा संघ का दूसरा कालखंड शुरू होता है।

यद्यपि गांधीजी का कहना था कि आठ घंटे के काम के लिये आठ आना मजदूरी दी जाय लेकिन व्यावहारिक दृष्टि से अेकदम अितनी मजदूरी देना संभव नहीं था। अिसलिये चरखासंघ ने प्रांत-प्रांत में अेक

कामगार को साधारणतः देहात में क्या मजदूरी मिलती है, अिसकी जाँच करके दिनभर के आठ घंटे के काम के लिये तीन आने मजदूरी निश्चित की, और अिससे कम मजदूरी खादी के काम करनेवालों को नहीं दी जानी चाहिये, अैसा निश्चय किया।

अिस काल की दूसरी विशेषताअें :— कातनेवालों की मजदूरी बढाने की समस्या पर चरखा संघ का ध्यान केन्द्रित होने से अुनकी कुशलता बढाने की ओर भी ध्यान देना स्वाभाविक ही था। केवल मजदूरी की दर बढा देने से अुद्देश्य की सिद्धि नहीं हो सकती थी। संघ को अैसा अुपाय भी देखना था कि जिससे मजदूरी बढने पर भी खादी के दाम अधिक न बढें। यह तभी हो सकता था जब कि कातनेवालों की कारीगरी में सुधार हो, ताकि वे आसानी से और कम समय में अधिक अुत्पादन कर सकें। अुस दृष्टि से खादी के सरंजाम और अमली तरीकों में काफी सुधार किये गये तथा कामगारों को कताअी आदि शिक्षा देने का विशेष प्रबन्ध किया गया। अुनके औजारों की दुरुस्ती और मरम्मत की ओर भी अधिक ध्यान दिया जाने लगा और कामगारों से विशेष संबंध स्थापित करने की भी कोशिश की गयी। अब तक कामगारों को बहुत कम मजदूरी दी जाती थी अिसलिये अुनको खादी पहिनने के लिअे कहना संभव नहीं था। लेकिन जब निर्वाह मजदूरी दी जाने से संघ ने अपने कामगारों को खादीधारी बनाने का और अुनकी मजदूरी से कुछ बचाने और अुसकी अुनको खादी देने का निश्चय किया, तब खादीधारी कामगारों से ही खादी का काम लेने की नीति बर्ती जाने लगी। कामगारों के रोजाना अिस्तेमाल की गुड, तेल, अनाज आदि चीजें सस्ते दामों में देने का प्रबन्ध करने की भी कोशिश की गयी। मतलब यह कि

कामगारों की योग्यता बढाने और अुनको आवश्यक सुविधाअें करा देने की संघ की ओर से कोशिश की गयी। पहिले काल खंड में सारा ध्यान बिक्री की ओर ही रहा था, वह अिस काल खंड में कामगारों की अुन्नति की ओर केन्द्रित हुआ। यह अिस कालखंड की विशेषता है।

खादी राष्ट्रीयता का बेरोमीटर :— लेकिन मजदूरी बढाने के कारण खादी के दाम भी बढे और अुसका असर खादी अुत्पत्ति बिक्री पर हुआ। १९३४—३५ में खादी की अुत्पत्ति जो करीब अेक करोड वर्गगज होती थी, वह निर्वाह वेतन शुरू होने के बाद साठ लाख वर्गगज पर आ गयी। लेकिन यह हालत अेक-दो वर्ष ही रही। १९३७ में देश के प्रान्त-प्रान्त में कांग्रेसी मंत्रिमंडल कायम हुअे और देश के लोगों में नया अुत्साह पैदा हुआ। खादी की मांग फिर धीरे-धीरे बढने लगी और १९३८ में पुनः खादी की अुत्पत्ति अेक करोड वर्गगज पर पहुंच गयी। देश में जब-जब राष्ट्रीय आन्दोलन हुअे तथा राष्ट्रीयता को जोर मिला, तब-तब खादी की मांग भी बढी है। और अिसलिये गांधीजी खादी को राष्ट्रीयता का बेरोमीटर कहते रहे हैं। निर्वाह वेतन लगाने से खादी के काम को धक्का लगेगा अैसा खादी कार्यकर्ताओं के दिल में जो डर था वह अिस तरह से बेबुनियाद साबित हुआ, और अुनको विश्वास हुआ कि खादी महँगी हो तो भी देश अुसे छोड नहीं सकता, क्योंकि देश की आजादी का वह अनिवार्य कार्यक्रम बन चुका था।

सन ४२ का आन्दोलन :— अिस तरह खादी का काम अपने पुराने विस्तार पर जा रहा था कि सन ४२ में 'भारत छोडो' आन्दोलन शुरू हुआ। सरकार ने भीषण दमन शुरू किया। गांधीजी और देश के नेताओं को जेल में बन्द किया गया। चरखासंघ को भी सरकार ने

नहीं छोडा। संघ के मंत्री तथा बहुत से कार्यकर्ताओं को गिरफतार किया गया। संघ के कअी अुत्पत्ति केन्द्र तथा भंडार बन्द कर दिये गये और सरकार ने अुनपर ताला लगा दिया। कहीं-कहीं माल छीन लिया गया, कहीं माल में आग लगा दी गयी, तो कहीं माल लुटा दिया गया। कहीं-कहीं खादी अुत्पत्तिबिक्री करने की संघ को मनाही कर दी गयी। अिन सब बातों के कारण सन १९४२-४३ में चरखा संघ का कार्य बहुत अस्त-व्यस्त हो गया। सरकार के अिस दमन से बिहार और युक्तप्रान्त के खादी कार्य को सब से ज्यादा नुकसान पहुंचा, और वहां का काम लगभग बंद सा ही रहा।

अिसी वक्त युद्ध के कारण सब चीजों की तंगी शुरू हो गयी। सरकारी नियंत्रण का अभाव, व्यापारियों का काला बाजार, आदि कअी कारणों से लोगों को मिल का कपडा मिलना मुश्किल हो रहा था और मिल के कपडे के भाव बेतहाशा बढ गये थे। मिल के कपडे के भाव दुगुने-चौगुने हो जाने पर भी खादी के भाव वे ही थे। अिसलिये वह मिल के कपडे से भी सस्ती मिल रही थी। अगर चरखा संघ का काम अिस समय पूर्ववत् चलता होता तो संभवतः खादी का मूल अुद्देश्य वस्त्रस्वावलंबन के काम में काफी प्रगति हुअी होती। लेकिन खादी का कार्य बहुत अस्तव्यस्त हो चुका था। अुसके बडे बडे कार्यकर्ता जेल में पडे हुअे थे और जो बाहर थे अुनपर भी सरकार की कडी नजर थी। अिसलिअे वस्त्रस्वावलंबन का संगठन तो दूर रहा, भंडारों से लोगों की मांग पूरी करना भी मुश्किल हो गया।

विकेन्द्रीकरण :—सन ४२ के बाद युद्ध की परिस्थिति के कारण जैसे जैसे महंगाअी बढती गयी वैसे वैसे खादी के दाम बढाने पडे। बाद

में कपडा, अनाज, आदि जीवन के लिअे विशेष आवश्यक चीजों के अुत्पादन, वितरण तथा मूल्य पर नियंत्रण लगाया गया और अिस कारण खादी भंडारों पर टूटने वाले दीगर खादीधारी लोगों की भीड कम हो गयी, और सच्चे खादीधारी ही खादी के ग्राहक रहे। फिर भी आन्दोलन के कारण खादीधारियों की संख्या अितनी बढ चुकी थी कि केवल अुनकी मांग पूरी करना भी चरखा संघ के लिये असंभव था। अिसलिये खादी का काम केवल चरखा संघ के आधीन न रख कर स्थानीय लोगों की सहकारी संस्था बना कर अुनके द्वारा चलाना जरूरी लगा। अुद्देश्य यह कि अगर वे ही अपने लिये अपनी आवश्यकता की खादी तैयार कर लें तो सरकारी दमन, दुलाओी की मुश्किलें, तरह तरह के अन्य कानूनी प्रतिबन्ध, आदि अडचनें बहुत कुछ कम हों, और खादी की प्रगति में सुविधा हो। अिस दृष्टि से जेल के बाहर चरखा संघ के जो कार्यकर्ता थे अुन्होंने खादीकार्य के विकेन्द्रीकरण की योजना बनायी।

विकेन्द्रीकरण का प्रश्न खादी कार्यकर्ताओं के सामने था। अुसी वक्त सन् ४४ में संघ के प्रधान कार्यकर्ता जेल से मुक्त हुअे, और गांधीजी भी जेल से बाहर आये। सरकार ने खादी कामको चोट पहुंचाओी थी अिसका गांधीजी के दिल पर बहुत असर हुआ और खादीकार्य को नयी दृष्टि से चलाने के अपने विचार अुन्होंने खादी कार्यकर्ताओं के सामने रखे। अुन्होंने कहा कि "अगर सरकार की मेहरबानी पर खादी को जिन्दा न रखना है तो हमें खादी को घर की चीज बना देना चाहिये। याने अब खादी का काम मजदूरी के बजाय वस्त्रस्वावलंबन के लिये होना चाहिये। लोग खुद गांव में ही जुलाहों से सूत बुनवा कर पहिनें तभी खादी का सच्चा प्रचार हुआ अैसा माना जावेगा। चरखा अहिंसा का

प्रतीक है, चरखे के पीछे जो अहिंसक जीवन का तत्वज्ञान है अुसके द्वारा ही अहिंसक समाज की रचना हो सकती है, अैसा समझ कर जब लोग चरखा चलाअेंगे तभी वे सच्चे खादीधारी होंगे।" अिस विचार को सूत्रमय वाक्य में अुन्होंने यों रखा :—

"कातो, समझबूझ कर कातो, कातें वे खद्दर पहिनें, पहिनें वे जरूर कातें।"

समझबूझ कर कातने का मतलब यह था कि जो चरखा चलावे वह अुसके मूल तत्व को समझे। केवल बाजार में बिक जाता है या गांधीजी कहते हैं अिसलिये न काते।

नवसंस्करण काल :—साथ ही गांधीजी ने समझ लिया कि अब समय आ गया है कि जब खादी कार्य के असली मकसद की ओर कदम रखना है। अुन्होंने अपनी स्वाभाविक दूरदर्शिता के कारण यह देख लिया कि अंगरेजी राज्य अब अस्तोन्मुख है। खादी का तात्कालिक अुद्देश्य–राहत द्वारा जनसंपर्क संपादन–प्रायः खत्म हो गया है। अुदयोन्मुख समस्या साम्राज्यवाद के हटने के बाद की समस्याअें थीं। अतः अब समय आ गया कि गांधीजी अपनी कल्पना के अनुसार समाज व्यवस्था की तैयारी में लगें।

गांधीजी ने चरखे को अहिंसा का प्रतीक कहा है। अुनका कहना है कि "यदि अहिंसा की अुपासना करनी है तो चरखे को उसकी साकार मूर्ति, अुसका प्रतीक मान कर अुसे आंखों के सामने रखना होगा। मैं अहिंसा का दर्शन करता हूं तब चरखे का ही दर्शन पाता हूं"। अर्थात् खादीकार्य के नतीजे से अगर अहिंसात्मक समाज की स्थापना नहीं हुअी तो वह कार्य गांधीजी की दृष्टि में खादीकार्य ही नहीं है। अब प्रश्न यह

है कि अहिंसक समाज की स्थापना कैसे हो ? वस्तुतः हिंसा की प्रवृत्ति मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण की प्रवृत्ति के लिये हुअी है। अब अहिंसात्मक समाज की रचना का मतलब शोषणहीन समाज की रचना है।

शोषण का स्थानः—हमने अितिहास के पन्नों पर देखा है कि मनुष्य द्वारा मनुष्य का जो शोषण होता है वह मुख्यतः दो दिशा में है। मनुष्य के स्वार्थ और हिंसा को संयम में रखने के बहाने मनुष्य ने जो शासन का आविष्कार किया है वही शासन क्रमशः प्रसारित होकर अुनके जीवन में अितना अधिक घुस जाता है कि वास्तविक क्षेत्र से मानव स्वतंत्रता का लोप हो जाता है और वह केन्द्रीय संचालन के साधन के रूप में परिणित हो जाता है। अिस तरह से आजादी छिन जाने से अुसका आत्मा सूख जाता है। अिसे हम आत्मा का शोषण कह सकते हैं। शोषण का दूसरा स्थान है मनुष्य का शरीर हजारों वर्षों से मानव समाज को ज्ञान, विज्ञान, व्यवस्था, प्रेरणा, नेतृत्व आदि चीजों को मुहय्या करने के बहाने कुछ अल्प संख्यकों की श्रेणी सारी आबादी के श्रमका शोषण करती है। और क्रमशः अिस पद्धति का विकास होने से आज अिस शोषक वर्ग द्वारा श्रमिक वर्ग का संपूर्ण शोषण होने लगा है।

चरखे द्वारा अिस दुधारे शोषण को समाप्त करना है, तो चरखे का कार्यक्रम अुसी दिशा में होना चाहिये, यह गांधीजी ने महसूस किया और चरखे के असली मकसद को बताते हुअे अुन्होंने कहा कि "आपको जो चरखा मैंने दिया है वह अहिंसा के प्रतीक के रूप में दिया गया है, अगर यह बात अिसके पूर्व आपको मैंने नहीं कही तो वह मेरी त्रुटि है।" वस्तुतः गांधीजी की अैसी त्रुटि नहीं थी। अुन्होंने सन १९२१ से अब तक बार-बार हमें अिस बात को बताया है। लेकिन सन ४५

में अुन्होंने चरखा संघ के सारे कार्यक्रम को अिस दिशा में बदलने पर जो जोर दिया, अितना जोर अुन्होंने पहिले कभी नहीं दिया था। अुन्होंने पहिले चरखे द्वारा राहत पहुंचाने की बात को काफी महत्व दिया था। लेकिन अब अुन्होंने समझ लिया कि राहतवाला जमाना खतम हो गया है। अिसलिये अुन्होंने जोर देकर कहा कि "खादी का अेक युग समाप्त हुआ। खादीने शायद गरीबों का अेक काम कर लिया है। अब तो गरीब वस्त्रस्वावलंबी कैसे बनें, खादी कैसे अहिंसा की मूर्ति बन सकती है, बताना रहा है। वही सच्चा काम है, अुसीमें श्रद्धा बतानी है।"

अब प्रश्न यह है कि मानव समाज में अहिंसात्मक समाज कायम करने के लिअे यानी दोनों प्रकार के शोषण को समाप्त करने के लिअे हमें क्या करना है? शताब्दियों से मनुष्य ने अिस शोषण के चंगुल से मुक्त होने की कोशिश की। केन्द्र के हाथ से मुक्ति पाने के लिअे अुसने फ्रान्स की क्रान्ति से सामन्तवादियों का नाश किया। अुसने सोचा कि अैसा करने से अुसको आजादी मिल जायगी। लेकिन अिसी चेष्टा के साथ साथ में वह अपने जीवन को कायम रखने के लिअे सहूलियत के मोह में फंस गया। अुसने अुत्पादन कार्य के आसानी के लिअे वाष्पीय यंत्र की सृष्टि की। लेकिन जिसने जनता की जिन्दगी की आजादी की सामग्री पैदा करने के लिअे यंत्रों पर अधिकार किया वे पूंजीपतियों के रूप में मानव समाज की छाती पर अधिक जबरदस्ती से बैठ गये, अुनके शोषण के लिअे।

अिन पूंजीपतियों ने जनता की जिन्दगी के सारे साधन अिस कदर अपने कब्जे में कर लिअे कि जनता को अिनके बिना अपने जान को कायम रखना असंभव हो गया। नतीजा यह हुआ कि

वर्ग-शासन का यंत्र और अुत्पादन का यंत्र दोनों अपने कब्जे में करके ये मनुष्य की आत्मा तथा शरीर का शोषण और गहराअी से करने लगे। क्यों कि मजबूर जनता के लिअे अुनके शिकंजे के नीचे दबे रहने के बजाय दूसरा और कोअी अुपाय ही नहीं रहा। वे पूंजीवादी शोषण के दलदल में अिस प्रकार फंस गये कि अुनकी आजादी की समस्या जहां के तहां रह गयी।

अिस स्थिति से छुट्टी पाने के लिअे मनुष्य ने रूस में फिर से क्रांति की। लेकिन वही सहूलियत के मोह में पडे रहने के कारण अुन्होंने शासन तथा अुत्पादन यंत्र को केन्द्रित ही रखा और अेक हितैषी दल के हाथ में सारे झंझटों के संचालन का बोझा डाल कर निश्चिन्त होना चाहा। लेकिन जनता की निश्चिन्तता से लाभ अुठा कर अपने अधिकार को मजबूती से संगठन करने के अुद्देश्य से सारी जनता को अिस दल ने दबा रखना चाहा। नतीजा वही हुआ कि जनसाधारण मुक्ति नहीं पा सका।

गांधीजी का समाधान :— गांधीजी चरखे के कार्यक्रम से जनता द्वारा मुक्ति की अिस प्रकार बार बार विफल चेष्टा को समाप्त करना चाहते थे। वे, मनुष्य की मौलिक आवश्यकता की पूर्ति तथा अुसकी आन्तरिक व्यवस्था के लिअे अुन्हें स्वावलंबी बनाना चाहते थे। क्यों कि, जब तक मनुष्य अपनी आत्म-व्यवस्था नहीं कर लेगा तब तक अुसे केन्द्रीय शासन के भरोसे रहना पडेगा। और आवश्यकताओं की पूर्ति में स्वावलंबी हुअे बिना अुसे केन्द्रीय तंत्र का मोहताज रहना पडेगा। अिस तरह केन्द्रीय तंत्र की चंगुलसे छूट कर मुक्ति की सांस अुसे नहीं मिल सकेगी। अिसीलिअे दुनिया में मनुष्य को सीधा रखने के लिअे जो अुत्कट राज्यवाद का सिलसिला चल गया है अुसको समाप्त

कर वे जनवाद को स्थापित करना चाहते थे। और जिन्दगी की साधन-प्राप्ति के लिअे केन्द्रीय पूंजी की अनिवार्य आवश्यकता का नाश करके जनता के जीवन को अुनके शरीरश्रम के आधार पर कायम करना चाहते थे। अर्थात वे पूंजीवाद का नाश कर श्रमवाद स्थापन करना चाहते थे। अैसा करने से ही मनुष्य युग युग की आशा को फलवती कर सकता है। क्यों कि यह स्पष्ट है कि जिसके हाथ में जान होगी वही मालिक होगा। अगर जनता के जान का आधार पूंजी है तो मालिक होगा वह जिसके अधिकार में पूंजी होगी, चाहे वह व्यक्ति, वर्ग या दल हो; और जब जान का आधार श्रम होगा तो मालिक होगा वह जिसके अधिकार में होगी "श्रम शक्ति" याने श्रमिक।

चरखा संघ का नया प्रस्ताव:— पूंजीवाद का नाश करके श्रमवाद की स्थापना तभी हो सकती है जब समाज की अर्थनीति केन्द्रीकरण का आधार छोड विकेन्द्रीकरण तथा स्वावलंबन के आधार पर रहे। १९४४ के आखिर में जेल से छौटते ही गांधीजी ने समझ लिया था कि अब चरखासंघ को अुपरोक्त नीति तुरंत अपनानी चाहिये। अगर संस्था की नीति स्वावलंबन और विकेन्द्रीकरण के आधार पर कायम करना है तो सब से पहिले चरखा संघ के कार्यक्रम को अुस आधार के अनुसार परिवर्तित करना जरूरी है। यद्यपि यह सही है कि खादी की अुत्पत्ति का काम देहातों में फैला हुआ था और अुसका बाहरी रूप विकेन्द्रीकरण का ही था, फिर भी चरखा संघ की कार्य-पद्धति केन्द्रीकरण के तरज पर संगठित रही। अिसलिये अिस बारे में अुनसे चर्चा करते हुअे जब चरखा-संघ के मंत्री ने कहा कि संघ के अुत्पत्ति-केन्द्र तो विकेन्द्रीकरण हैं तो गांधीजी ने अिसे नहीं माना। अुन्होंने कहा "आपने जब कहा कि

अुत्पत्ति-केन्द्र में तो विकेन्द्रीकरण है ही, तभी मैं कहने जा रहा था कि नहीं है। मसलन लेंकाशायर में भी कपड़ा घरों में बनता है लेकिन घरों के अुपयोग के लिये नहीं। घर-घर में सब कुछ बनता है, जो मालिक हैं अुनके लिये। अिसे विकेन्द्रीकरण कहना अनर्थ होगा। वैसे ही जापान में सब का सब सरकार के लिये घर-घर में सब कुछ बनता है, लेकिन सरकार ने सब का केन्द्रीकरण कर रखा है। चीजें घरों में ही बनती हैं, बनाने का ढंग भी अिंग्लैंड से बढ़िया है, लेकिन घरवाले अुसमें से कुछ भी अपने अुपयोग के लिये नहीं रख सकते। यह या तो सरकार कराती है या कहिये दो-चार व्यापारी सरकार के लिये कराते हैं। फिर अुन चीजों को देश-देश के बाजारों तक पहुंचाने के लिये जहाज वगैरा सब कुछ सरकार ही देती है, और अिस तरह अन्यान्य देशों का धन अपनी तरफ खींच लाती है। लंकेशायर का भी वही हाल है। वहां मिलों में लाखों धोतियां बनती हैं लेकिन अुन्हें यदि वहां खरीदना चाहें तो नहीं मिलेंगी। सब हिंदुस्थान के लिये मद्रास, बंबअी, कलकत्ता आयँगी, वैसे ही अफ्रिका के लिये जो माल बनेगा वह वहां जायगा। अिन सब को मैं विकेन्द्रीकरण नहीं कहूंगा।

हमने भी वही किया। हमारे कारीगर अितना ही जानते हैं कि वे चरखा संघ का काम करते हैं, और तैयार माल अुसीको देना है। हमने मजदूरी बढ़ाअी, कारीगर खुश हुअे। यदि हम अिस नतीजे पर पहुँचे हों कि खादी बेचने की चीज नहीं है, पहनने की चीज है, तभी मानना चाहिये कि हम खादी का संदेश पूरा समझ गये और खादी की शक्ति की मर्यादा भी जान गये।

वस्तुतः केन्द्रीय पूंजी तथा केन्द्रीय व्यवस्था द्वारा जो काम चलता है वह देशभर में फैला हुआ होने पर भी विकेन्द्रीकरण नहीं है, स्वाव-

लंबन तो वह है ही नहीं। समाज में अुत्पादन, वितरण तथा अुपयोग के नाम से तीन अलग-अलग संस्थाओं की सृष्टि केन्द्रीय अुद्योगवादी अर्थ-शास्त्र ने की है। श्रमवादी स्वावलंबी अर्थशास्त्र अिन तीनों संस्थाओं को नहीं मानता है। क्यों कि स्वावलंबन का अर्थ यह है कि अुत्पादक खुद ही अुपभोक्ता हो। अिस अर्थनीति में वितरण को कोअी स्थान नहीं है। यही कारण है कि गांधीजी ने अपनी कल्पना के आदर्श समाज की स्थापना की दिशा में कदम रखने के लिये चरखा संघ के सामने यह प्रस्ताव रखा कि अब संघ को अुत्पत्ति-विक्री का काम छोड कर वस्त्र-स्वावलंबन के आधार पर समग्र-ग्रामसेवा का काम हाथ में लेना चाहिये, तो जो लोग संघ द्वारा चलाये हुये अितने बडे काम को खतम करना नहीं चाहते थे, अुनके यह कहने पर कि अुत्पत्ति-बिक्री का जैसा काम चल रहा है अुसे दूसरी संस्थायें करें और चरखा संघ खादी के अिस मूल नीति के अनुसार कार्यक्रम बनाये, अुन्होंने कहा :- "मेरे सामने जो चित्र है अुसमें खादी दूसरे को सौंपने की बात नहीं आती !" और तमाम खादीकाम करने वाली संस्थाओं को चरखे के मूल अुद्देश्य की दिशा में कदम अुठाने पर जोर दिया।

अतअेव चरखे द्वारा गांधीजी के असली मकसद की ओर कदम रखने के लिये यह जरूरी हो गया था कि चरखा संघ तथा दूसरी खादी संस्थायें सिर्फ वेचने के लिये खादी बनाना बंद करके अैसा कार्यक्रम बनावें कि जिससे खादी द्वारा गांधीजी जो आर्थिक, सामाजिक तथा राज-नैतिक क्रान्ति करना चाहते थे, अुसका बोध करवा कर जनता को सही आजादी याने स्वराज्य की ओर प्रवृत्त करने की दिशा में प्रगति हो सके।

अुपरोक्त अुद्देश्य-सिद्धि के लिये गांधीजी की प्रेरणा से चरखा संघ ने निम्नलिखित प्रस्ताव द्वारा संघ की कार्यनीति में आमूल परिवर्तन करने का संकल्प किया।

"चरखे की जड देहात है और चरखासंघ की पूर्ण कामना-पूर्ति देहातों तक विभक्त होकर देहात की समग्र सेवा करने में है। अिस ध्येय को खयाल में रखते हुये चरखासंघ की यह सभा अिस निर्णय पर आती है कि संघ की कार्य-प्रणाली में निम्न लिखित परिवर्तन किये जायं।

(१) जितने सुयोग्य कार्यकर्ता तैयार हों और जिनको संघ पसंद करें वह देहातों में जायं।

(२) बिक्री भंडार और अुत्पत्ति-केन्द्र मर्यादित किये जायं।

(३) शिक्षालयों में आवश्यक परिवर्तन किये जायं, परिवर्धन किये जायं तथा नये शिक्षालय खोले जायं।

(४) अितने क्षेत्र वाले कि जो अेक जिले से अधिक न हों, यदि नयी योजना के अनुसार काम करने के लिये स्वतंत्र और स्वावलंबी होना चाहें और अुन्हें यदि संघ स्वीकार करें, तो अुतने क्षेत्र में चरखा-संघ अपनी ओर से काम न करे और जब तक वहां काम चरखा संघ की नीति के अनुसार चले, अुसको मान्यता और नैतिक बल दे।

(५) चरखा संघ, ग्रामोद्योग संघ, हिंदुस्थानी तालीमी संघ, गोसेवा संघ और हरिजन सेवक संघ, अिन संघों की अेक सम्मिलित समिति बनायी जाय, जो समय-समय पर अिकट्ठी होकर नयी कार्य-प्रणाली के अनुकूल आवश्यक सूचनाअें निकाला करे।"

समाज में श्रेणीहीनता की आवश्यकता :—अुपरोक्त प्रस्ताव के साथ-साथ गांधीजी ने चरखा संघ के सामने यह प्रस्ताव रखा कि अगर

लोगों को वस्त्र पहिनना है तो अुन्हें कातकर ही पहिनना चाहिये और मुल्क में अिसे व्यवहारिक रूप देने के लिये अुन्होंने कहा कि जो लोग खादी खरीदें वे रुपये में कम से कम दो पैसे का सूत, खुद कातकर या अपने परिवार में कतवाकर दें। दुनिया में कभी अहिंसक समाज बनना है तो आज समाज में जो श्रेणी-विषमता चल रही है अुसका अंत करना ही होगा। अेक वर्ग शरीरश्रम से अुत्पादन करे और दूसरा अुसके हित संपादन करके देने के बहाने शोषण करे तो अहिंसात्मक समाज की कल्पना करना वृथा है। अगर श्रेणी-विषमता का लोप करना है तो संसार में अेक श्रमिक वर्ग ही रह जाय अैसी स्थिति पैदा करनी होगी। यह तभी हो सकता है जब प्रत्येक व्यक्ति शरीरश्रम से अुत्पादन करने लगे। प्रत्येक व्यक्ति कम से कम अपने कपडे के लिये तो काते, यह कदम शोषकों को अुत्पादन कार्य में लगाकर, अुत्पादक याने श्रमिक वर्ग में परिणित करने की अेक हल्कीसी सक्रिय चेष्टा मात्र है। संसार में यदि श्रमिकों का अेक ही वर्ग रखना है तो आज जो लोग बिना श्रम किये संसार की अुत्पादित सामग्री का अुपभोग करते हैं अुनका विघटन करने की आवश्यकता है। गांधीजी अिसे अहिंसात्मक तरीके से ही करना चाहते थे, और वह तरीका है वर्ग परिवर्तन का। क्यों कि वर्ग-विषमता की समस्या का समाधान दो ही तरीके से हो सकता है, अेक है। वर्ग-परिवर्तन, और दूसरा वर्ग-संघर्ष। वर्ग संघर्ष का तरीका हिंसात्मक होने से गांधीजी द्वारा ग्राह्य नहीं हो सकता था।

दूसरी बात यह है कि चरखा अगर स्वावलंबन का प्रतीक है तो खादी पहिननेवालों को स्वावलंबन का सिद्धान्त मानना ही चाहिये, नहीं तो खादी का कोअी तात्विक अर्थ नहीं निकलता है। समाज की

व्यवस्था स्वावलंबन पद्धति के आधार पर कायम करना है तो जो लोग केन्द्रीय व्यवस्था को नहीं मानते हैं अुन्हें स्वावलंबन व्यवस्था स्वीकार करनी ही चाहिये। स्वावलंबन को अिनकार करके खादी पहिनने का कोअी मतलब ही नहीं होता है। सूतशर्त द्वारा गांधीजी यही चाहते थे कि खादी वही पहिने जिसे खादी के मूल तत्व पर आस्था तथा श्रद्धा हो।

अिसके अलावा गांधीजी ने, चरखा संघ के अिस क्रान्तिकारी कदम को कामयाब करने के लिये देश के नौजवानों से अपील की। अुन्होंने कहा कि सात लाख नौजवान अपना वर्ग-परिवर्तन कर किसान और मजदूरों में समरस हो जायँ, फिर अुनके साथ मिलकर नयी क्रान्ति के अग्रदूत बनें। मतलब यह कि सात लाख नौजवान जनता में प्रेरणा तथा नेतृत्व का विकास कर अुन्हें सर्वांगीण स्वावलंबी बनायें, ताकि जिन सेवाओं के बहाने शोषक वर्ग अुनका शोषण करते हैं, अुसे अस्वीकार कर वे अपने को शोषित होने से अिनकार कर सकें, दूसरी ओर खादी के लिये आंशिक सूत कतवा कर देश के असंख्य नर-नारियों का मानसिक रुझान अुत्पादक वर्ग से अेकात्मता की दिशा में ले जाकर मुल्क भर में वर्गहीन समाजरचना की ओर क्रान्तिकारी वातावरण की सृष्टि हो सके।

अुपरोक्त प्रस्ताव के बाद गांधीजी ने 'हरिजन' तथा 'खादी जगत' के मार्फत अपनी नयी योजना का देश भर में प्रकाश डालना शुरू किया और देश भर के कार्यकर्ताओं की दृष्टि अपनी ओर आकर्षित करने में वे लगे।

राजनैतिक स्थिति में परिवर्तन:—अिस बीच कांग्रेस कार्य-समिति के सदस्य जेल से छूटे और थोडे ही दिनों में कांग्रेस के दूसरे प्रान्तीय नेताओं की रिहाअी हुअी। अुनके बाहर आने से वातावरण में कुछ परिवर्तन हुआ। चोटी के नेता से लेकर मामूली कांग्रेस जनता तक अधिकांश लोगों ने गांधीजी की अिस नयी योजना का विरोध किया। सूतशर्त लगने से वे नाराज भी हुअे। अुन्होंने अिसको गांधीजी की जबर्दस्ती माना, क्यों कि अुनकी राय में, सूतशर्त यह कांग्रेस को जबरदस्ती गांधीजी की अर्थनीति मनवाने की चेष्टा थी। कांग्रेस ने पदाधिकारियों के लिये यह लाजमी किया था कि वे आदतन खादीधारी हों। सूतशर्त के नतीजे से कांग्रेस के पदाधिकारियों के लिये यह लाजमी हो गया था कि वे अपने परिवार में कताअी दाखिल करें। पहिले ही कहा जा चुका है कि कांग्रेस विविध विचारधारा माननेवालों का अेक संयुक्त मोर्चा थी। अुनमें अधिकांश केवल राष्ट्रवादी थे, जिनको कि गांधीजी के आर्थिक तथा सामाजिक क्रान्ति के तरीकों पर आस्था नहीं थी। अतः कांग्रेसजन का विरोध स्वाभाविक ही था।

लेकिन गांधीजी ने १९२५ में चरखा संघ को अिसलिये स्थापित किया था कि वे अिसके जरिये खादी के मूल अुद्देश्य की ओर बिना रुकावट के आगे बढ सकें। वे संघ को अपनी धारणानुसार समाजक्रान्ति का साधन बनाना चाहते थे। साथ ही वे यह नहीं चाहते थे कि किसी पर अपनी राय लादें। जो लोग गांधीजी के अर्थ तथा समाज नीति पर विश्वास नहीं करते हैं वे अपने तरीके से ही काम करें। गांधीजी की यह नीति सदा ही रही। अिसलिये चरखा संघ की नयी नीति चलाने के बारे में वे अटल रहे और कांग्रेस को अुन्होंने यह सलाह दी कि वे खादी की शर्त हटा लें। अुन्होंने तो स्पष्ट और दृढता के साथ तमाम

कार्यकर्ताओं को संबोधित करके पहिले ही कह दिया था कि— "यदि आप खादी के क्षेत्र को यहीं तक सीमित रखेंगे कि वह गरीबों को रोटी दे, तो खादी अहिंसा द्वारा स्वराज्य प्राप्त करने में सहायक नहीं हो सकती। मैं यह नहीं चाहता। अगर सूत लेने की शर्त पर जोर देने के परिणाम स्वरूप मैं अकेला ही खादी पहिननेवाला रह गया तो भी मैं अिसकी चिन्ता नहीं करूंगा। आपने खादी को अहिंसा का प्रतीक माना है। आपने अिसे स्वराज्य-प्राप्ति का साधन भी माना है। यदि परमात्मा की यही अिच्छा है कि खादी मर जाये तो मैं अिसे अपनी स्वाभाविक मौत ही मरने दूंगा, लेकिन आप अिसे अपनी भीरुता तथा विश्वास की कमी के कारण न मार डालें।"

अिसी समय ब्रिटिश सरकार से कांग्रेस की बातचीत होने लगी, गांधीजी भी अुसी काम में फँसे रहे। फिर देश को आजादी मिली और साथ-साथ मुल्क की राजनैतिक जिन्दगी में अकथनीय अुथल-पुथल हुअी। गांधीजी और मुल्क के अधिकांश लोगों के दिमाग अुसी में अुलझे रहे। नतीजा यह हुआ कि अिस दरम्यान गांधीजी ने जिस महान क्रान्ति के अुद्देश्य से चरखा संघ के नवसंस्करण की बात की, अुसको रूप देने के लिये अुनको अवकाश ही नहीं मिला। नवसंस्करण का प्रस्ताव हुआ। लेकिन गांधीजी तथा देश के मुख्य कार्यकर्ताओं का ध्यान दूसरी ओर फँसा रहने के कारण नयी योजना का कार्य चरखा संघ के साधारण छोटे कार्यकर्ताओं के हाथ में पड़ कर अेक जड़-नियम रूप में रह गया। अिससे योजना को न तो कुछ नयी प्रेरणा मिली और न अिसमें विशेष प्रगति ही हुअी। सूत-शर्त लग गयी लेकिन अुसके आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक पहलुओं की चर्चा गांधीजी के कुछ लेखों के सिवाय दूसरे जरिये मुल्क में फैल नहीं सकी। नतीजा यह हुआ कि सारा कार्यक्रम कुछ अचेतन-सा चलने लगा।

गांधीजी के निधन के बादः— ३० जनवरी १९४८ के गांधीजी के निधन से सारा देश किंकर्तव्य-विमूढ सा हो गया। अब तक सारा मुल्क और विशेष कर रचनात्मक कार्यकर्ता अपने काम के हर छोटे-छोटे ब्योरे के लिये गांधीजी के पास पहुँच जाते थे। अब अुन्हें अपना रास्ता अपने आप निकालना था। अुनके सामने क्षणिक अंधकार दिखाओ देना स्वाभाविक ही था।

रचनात्मक कार्यकर्ता, गांधीजी के मार्ग पर अपनी प्रेरणा से किस तरह चल सकें अिस पर विचार करने के लिये, मार्च के द्वितीय सप्ताह में सेवाग्राम में सम्मिलित हुये, और गांधीजी के कार्यक्रम के बारे में विस्तार पूर्वक चर्चा हुओ। चर्चा में जो मार्ग-दर्शन मिला अुसके अनुसार हरेक संस्था ने अपनी अपनी बैठक की और नयी योजनाओं बनायीं। देश के राजनैतिक अुथल-पुथल के कारण गांधीजी के नवसंस्करण का जिस तरह अमल होना चाहिये था वह न हो सका था, अतः अिस समय चरखा संघ का ध्यान अिस दिशा में केन्द्रित होना जरूरी था। अुधर कॉंग्रेस ने भी गांधीजी की सलाह के अनुसार कॉंग्रेस के सदस्यों पर से आदतन खादी पहिनने की शर्त को हटाया तो नहीं, बल्कि विधान के अनुसार अुसका दायरा और बढा दिया। देश की बहुतसी खादी संस्थाओं की ओर से भी सूत-शर्त का विरोध जाहिर होता रहा। अिन तमाम प्रश्नों को चरखा संघ के ट्रस्टी मंडल ने गहराओ से विचार किया। सारे पहलुओं पर चर्चा होकर यही ठीक लगा कि चरखा संघ तो गांधीजी के बताये हुओ मूल अुद्देश्य की ओर ही अपना ध्यान केन्द्रित करे और मुल्क की दूसरी संस्थाओं की जैसी मर्जी वैसा करने दे। चरखा संघ अपने सिद्धान्त को कायम रखते हुओ जितनी मदद कर सके, करे।

अब प्रश्न यह अुठा कि चरखा संघ अिन खादी का काम करनेवाली संस्थाओं को प्रमाण-पत्र दे या नहीं। सन ४५ में नवसंस्करण की बातें करते समय गांधीजी की राय अिस बारे में स्पष्ट थी। अुनकी राय में खादी व्यापार की चीज ही नहीं थी। यही कारण है कि जब अिस काम को दूसरे लोगों को सौंपने की बात चली थी तब गांधीजी ने कहा था कि " खादीकार्य को दूसरों के सुपुर्द करने की बात ही नहीं आती। हम तो शहरवासियों को अितना ही कह देंगे कि यदि खादी पहनना है तो अुसका जो शास्त्र ढूंढा है, वही है। वह केवल अर्थ-शास्त्र ही नहीं बल्कि अनिवार्य रूप से नीति-शास्त्र भी है। अिसीसे सब को अपनी-अपनी खादी बनानी होगी। " अिसलिये खादी का व्यवसाय करनेवालों को प्रमाण-पत्र देकर अुनको हम संघ की प्रतिष्ठा नहीं देंगे। हम अुनके क्षेत्र से ही निकल जावेंगे ताकि प्रमाण-पत्र का कोअी अर्थ ही न रहने पावेगा। अितनी ही मर्यादा रखेंगे कि अिर्द-गिर्द के देहातों में कोअी काम चलता हो और वहां हमारे पास कोअी खादी बच जाय, और यदि वह शहरवालों के काम की हो तो ये भले ही ले जायँ। "

अुपरोक्त बातों का खयाल रखते हुअे चरखा संघ के सामने यह भी विचार आया कि हम प्रमाण-पत्र से निकल जायं। लेकिन कॉंग्रेस ने नये विधान में खादी-शर्त व्यापक बना कर जो बड़ा कदम अुठाया, अुस कारण अुनको धोखा न हो अिसकी भी कुछ नैतिक जिम्मेवारी चरखा संघ की थी। देश के कुछ दूसरे लोग भी यह चाहते थे कि खादी की शुद्धता संबंधी धोखे से बचने के लिये चरखा संघ के संगठन का लाभ अुन्हें मिले। संघ ने अिन बातों पर विचार किया और अंत में मध्यम मार्ग का निर्णय कर निम्न प्रस्ताव पास किया :—

" कॉंग्रेस पंचायत के अुम्मीदवारों के लिये खादी पहनना लाजमी करके कॉंग्रेस ने अेक भारी कदम अुठाया है, अैसा चरखा संघ महसूस करता है। अिसलिये सहूलियत से खादी मुहैया हो अैसे खयाल से खादी को प्रमाणित करने की शर्तों में से सूतशर्त को चरखा संघ अुठा लेता है। प्रमाणित करने की बाकी की शर्तें, जो कि खादी की शुद्धता और मजदूरी के हित में हैं, रहेंगी। अितना करने के अुपरान्त चरखा संघ अपना पूरा ध्यान अिसके आगे वस्त्र-स्वावलंबन पर ही देगा। यानी अुत्पत्ति-बिक्री का कार्य केवल अुत्पत्ति-बिक्री के लिये वह नहीं करेगा। वस्त्र स्वावलंबी लोगों की पूर्ति में अगर कुछ खादी वह दे सका तो वह देने की कोशिश करेगा। चरखा संघ को अिस तरह अपने को परिवर्तन करने में जो समय लगेगा, अुस दरम्यान चरखा संघ के द्वारा जो बिक्री होगी वह अुसी तरह सूतशर्त से होगी जैसी अभी है।"

संघ की नयी योजना :—अूपर के प्रस्ताव से स्पष्ट है कि संघ ने प्रमाणित संस्थाओं को अपने ढंग से काम करने की अिजाजत देकर जिन मित्रों को गांधीजी की खादीकार्य की मूल नीति से मतभेद था अुनके विरोध से संघ मुक्त हुआ और अब निश्चित होकर अपना कदम आगे अुठा सकता था। अब अुसका ध्यान नयी नीति के व्यावहारिक स्वरूप की ओर गया।

खादी द्वारा मुल्क को अगर आर्थिक तथा सामाजिक क्रान्ति की दिशा में ले जाना है तो यह जरूरी है कि संघ के स्वरूप में परिवर्तन हो। अितना बडा क्रान्तिकारी आन्दोलन चरखा संघ अेक सीमित संस्था के रूप में चल नहीं सकता है। अतः आवश्यकता अिस बात की है कि संघ का स्वरूप व्यापक होकर देशभर में फैल जाय। अब संघ ने संपूर्ण

वैतनिक कार्यकर्ताओं द्वारा तथा शाखा-प्रशाखाओं द्वारा काम चलाने के सिलसिले को छोड दिया और देश में जहाँ कहीं असे व्यक्ति हों, जिन्हें संघ के अुद्देश्य पर श्रद्धा तथा निष्ठा हो, अुन्हें संघ से संबंधित कर अुनके द्वारा भी काम करना जारी किया। संघ ने यह प्रथा शुरू की कि अपनी शाखा के अलावा भी कहीं कोअी शक्तिशाली और भावनाशील व्यक्ति अगर संघ की नीति के अनुसार काम करने को तैयार हो तो वहाँ स्वतंत्र केन्द्र चलाया जाय।

अिन तमाम प्रवृत्तियों को मिला कर संघ ने निम्नलिखित निश्चित कार्यक्रम बनाया।

(१) सहयोगी सदस्य :— व्यापक रूप से संघ के सिद्धान्त को माननेवाले सभी व्यक्तियों को शामिल करने के लिये "सहयोगी सदस्यता" का कार्यक्रम रखा गया। जो लोग संघ की नीति तथा आदर्श पर विश्वास करते हैं, आदतन खादी पहिनते हैं तथा स्वयं कात कर चरखा संघ को सालाना छः गुंडी सूत चंदे में दे सकते हैं वे सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। अिस तरह लाखों भाअी-बहिन जो हमारे कार्यक्रम तथा आदर्श पर आस्था रखते हैं लेकिन अनजान में जहाँ तहाँ बिखरे पडे हैं वे संघबद्ध होकर अपनी-अपनी श्रद्धा में अुन्नति कर सकेंगे, और जिस आन्दोलन को चरखा संघ देश और दुनिया में फैलाना चाहता है अिस प्रकार अुसको ठोस नैतिक बल मिलेगा। साथ-साथ आपस में अेकसूत्रता संपादन होने से अुनमें बहुत बडा आत्मविश्वास का बोध पैदा होगा।

(२) सहयोगी सेवक :— लाखों सहयोगी सदस्यों में कुछ असे सदस्य भी होंगे जो चरखा संघ के काम में सक्रिय योग देते रहेंगे तथा अुसके लिये कुछ सक्रिय प्रसवष समय भी देंगे। असे लोगों को, जिनकी जीवन-

निष्ठा तथा कर्मपद्धति नयी क्रान्ति को सक्रिय रूप से आगे बढाने में अनुकूल होगी, अुन्हें चरखा संघ "सहयोगी सेवक" के रूप में आमंत्रित करेगा। अगर अुन्हें मंजूर होगा तो वे संघ के "सहयोगी सेवक" श्रेणी में दाखिल होंगे। अैसे सेवक चरखा संघ को जितने समय का दान करेंगे अुतने समय में वे संघ द्वारा बनाअी योजना का संचालन करेंगे। वस्तुतः "सहयोगी सेवक" ही व्यापक रूप से नवीन दिशा में खादीकार्य को आगे बढाने की मुख्य शक्ति होंगे।

वैसे प्रधानतः जो लोग सहयोगी सेवक होंगे वे हमारे कार्यक्रम की दिशा में कुछ-न-कुछ व्यक्तिगत रूप से काम करते ही रहे हैं। लेकिन व्यक्तिगत रूप से अलग-अलग बिखरे हुअे होने के कारण अुनके काम में अुतनी मजबूती नहीं हो सकी थी। चरखा संघ के व्यापक संगठन के साथ संबंधित होने से अुनके समय तथा श्रम को संघ-शक्ति मिलने से वह फलीभूत होगा और संघ को भी अैसे असंख्य सहयोगी सेवकों की सेवा से अपने व्यापक आन्दोलन की दिशा में बल मिलता रहेगा।

(२) स्वावलंबी सदस्य:— जो लोग स्वावलंबी समाज की रचना की दिशा में अेक कदम आगे बढकर सक्रिय व्रत लेंगे, वे संघ के स्वाव-लंबी सदस्य माने जावेंगे। अैसे सदस्य आदतन खादीधारी होंगे और अपने कपडे के लिये महीने में कम-से-कम साढे सात गुंडी सूत कातेंगे। साढे सात गुंडी का मान अिसलिये रखा गया है कि सर्वसम्मति से यह माना गया है कि देश के प्रतिव्यक्ति को औसत २० वर्गगज कपडा प्रतिवर्ष मिलना चाहिये। ९० गुंडी मोटे और बारीक सूत के औसत से २० वर्गगज कपडा बनता है। और जो लोग कम-से-कम अिस औसत को पूरा करते हैं अुन्हें चरखा संघ वस्त्रस्वावलंबी सदस्य मान लेगा। जो लोग संयुक्त कताअी करते हैं अुन्हें अिस औसत से बरी कर साढे सात गुंडी के बजाय साढे पाँच गुंडी कातने की सहूलियत दी गयी है।

सालाना सेवक तथा स्थायी सेवक :—उपरोक्त सेवक तथा सदस्यों के अलावा, ऐसे सेवकों की आवश्यकता होगी जो पूरे समय के लिये अपनी सेवा चरखा संघ को दे सकेंगे। वैसे सेवकों के दो विभाग किये गये हैं। अेक, सालाना सेवक और दूसरा, स्थायी सेवक। सालाना सेवक वे होंगे जो अपने जीवन की अेक साल की अवधि स्वेच्छा से दान करेंगे। अिनको हम चरखा जयंती के अवसर पर निमंत्रण देते हैं। लेकिन वे अपनी-अपनी सहूलियत के अनुसार साल में दो बार काम शुरू कर सकते हैं, १ दिसंबर से या तो १ जून से। अगर हम मूल क्रान्ति की बात छोड भी दें, फिर भी हरअेक नये राष्ट्र के लिये यह आवश्यक है कि मुल्क का हरएक नव-जवान अपने जीवन का कुछ निश्चित हिस्सा राष्ट्र-निर्माण के काम में लगावे।

आधुनिक केन्द्रवादी प्रथा यह है कि अैसे अवसर पर मुल्क की सरकारें हर नव-जवान के लिये लाजिमी भर्ती का कानून बनाती हैं। लेकिन संसार में अहिंसक समाज की रचना करनी है तो लाजिमी भर्ती के स्थान पर नव-जवानों को अैच्छिक सेवादान करना होगा, क्यों कि हमारा सारा कार्यक्रम जन-स्वतंत्रता के आधार पर है। मजबूर होकर काम करने में न मनुष्य की आत्मा का विकास होता है और न समाज का नैतिक स्तर ही अूँचा होता है।

दूसरे वे नव जवान होंगे जो चरखा संघ के स्थायी सेवक के रूप में काम करेंगे। वे नयी क्रान्ति के लिये अपनी जिन्दगी को समर्पित करेंगे।

कताअी मंडल :—अब प्रश्न यह है कि अैसे सदस्य तथा सेवकों का कार्यक्रम क्या होगा? अब तक चरखा संघ वस्त्रस्वावलंबन का काम

करता था, और वह काम होता था केन्द्रीय प्रेरणा से तथा केन्द्र से भेजे हुअे कार्यकर्ताओं के भरोसे। श्रेणीहीन तथा शासनहीन समाज स्थापित करने के लिये जहाँ अेक ओर से अिस बात की आवश्यकता है कि हजारों की तादाद में नव-जवान वर्ग-परिवर्तन कर अुत्पादक वर्ग में विलीन हो जायं, वहाँ यह भी आवश्यक है कि जनता में अैसा संगठन पैदा किया जाय कि जिससे शासन यानी बाहरी व्यवस्था के बिना भरोसे ही जनता अपनी प्रेरणा, नेतृत्व, साधन तथा व्यवस्था से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा समाज की व्यवस्था चलाने की शक्ति अुत्पादित कर सके। वस्तुतः जब तक जनता में अैसी शक्ति का अुत्पादन नहीं होता तब तक ग्रामराज्य या शासनहीन समाज की स्थापना असंभव है।

आज केन्द्रीय शासन विधान द्वारा जनता को शक्ति देने के लिये कअी प्रयोग चलाये जा रहे हैं। स्थान स्थान पर वैधानिक कानून द्वारा ग्रामीण जनता को अधिकार देने की भी बात चल रही है। लेकिन अैसे केन्द्र से प्राप्त अधिकार से जनता स्वतंत्र रूप से स्वराज्य कायम करने की शक्ति हासिल नहीं कर सकती। वैधानिक कानून से प्राप्त शक्ति केन्द्र द्वारा वितरित शक्ति है, जनता द्वारा अुत्पादित नहीं। जिस प्रकार देवालय के अन्नसत्र से प्राप्त अन्न द्वारा किसी की तात्कालिक भूख मिट सकती है, लेकिन अुसका स्थायी गुजारा नहीं हो सकता, अुसके लिये तो अन्नका अुत्पादन करना ही होगा, अुसी तरह केन्द्र से वितरित शक्ति द्वारा जनता की तात्कालिक बेहोशी दूर हो सकती है, लेकिन अुसमें स्वराज्य चलाने की शक्ति तथा योग्यता नहीं आ सकती। अिसलिये अगर चरखा संघ द्वारा ग्रामराज्य स्थापना करना हो तो जनता की ही अैसी छोटी छोटी अिकाअी

बनानी होगी जो वस्त्रस्वावलंबन से शुरू कर गांव की सारी जिम्मेवारी अपने शूपर शुठा ले सके। जनता की अिस छोटी अिकाअी की प्रेरणा तथा शक्ति से जो जिम्मेदारी शुठाअी जावेगी शुसी के आधार पर सही अधिकार का विकास होगा। अिस प्रकार शुत्पादित अधिकार से अधिकारी जनता को शक्ति के लिये केन्द्रों की ओर ताकना नहीं होगा बल्कि केन्द्र अपनी शक्ति के लिये अिन शक्तिशाली संगठनों की ओर ताकेगा, तभी सच्ची लोकशाही स्थापित होगी और तभी ग्रामराज्य याने जनता का राज्य स्थापित हो सकेगा।

अिस शुद्देश्य को सामने रख कर चरखा संघ ने कताअी मंडल की योजना बनाअी है। किसी अेक क्षेत्र के कम से कम पांच परिवार के पांच सहयोगी सदस्य मिल कर अेक मंडल बनायेंगे। चरखा संघ के कार्यकर्ता तथा सहयोगी सेवक आदि का काम होगा अैसे कताअी मंडलों का संगठन और शुनकी कठिनाअियों का निराकरण करना। चरखा संघ अिन मंडलों का शिक्षण तथा मार्गदर्शन करेगा। मंडल का काम शुरू में सदस्यों का वस्त्रस्वावलंबन तथा सदस्यों की वृद्धि करने का होगा। क्रमशः जैसे जैसे मंडल की शक्ति बढेगी वैसे वैसे शुसके लिये ग्राम-सफाअी, सहयोगी समितियों का संगठन, अन्न तथा गृहसमस्या का समाधान, शिक्षा, सांस्कृतिक विकास आदि सभी कार्यक्रमों की जिम्मेदारी लेनी होगी। शासनहीन समाज की दिशा में अहिंसक क्रांति का संगठन करने के लिये चरखा संघ का यह निश्चित कदम है। और संघ का विश्वास है कि हजारों की तादाद में अैसी छोटी छोटी अिकाअियां केन्द्रीय शासन के स्थान पर सारी समाज व्यवस्था की बागडोर अपने हाथ में ले लेंगी।

कताओी शिविर तथा संमेलन :— चरखा संघ ने जो आखिरी प्रस्ताव किया था कि 'चरखे की कल्पना की जड देहात है और चरखा संघ की कामना पूर्ति अुसके देहात में विभक्त होने में है,' अिसकी सफलता कताओी मंडलों की सफलता पर निर्भर है। क्योंकि कताओी मंडलों का ठोस संगठन ही चरखा संघ के देहात में विभक्त होने का साकार स्वरूप है। लेकिन यह कामना पूर्ति कताओी मंडलों का संगठन करके छोड देने से नहीं होगी। चरखा संघ मंडलों के भरोसे अपने को तभी विघटित कर सकता है जब मंडलों के सदस्य तथा कार्यकर्ताओं का जीवन, विचार तथा दृष्टि शासन तथा शोषणहीन समाज को कायम रखने के अनुकूल हो। जीवन का अनुशासन, व्रतनिष्ठा तथा संकल्पशक्ति अिस बात की बुनियाद है। अिसलिये आवश्यकता अिस बात की है कि नयी क्रांति की दृष्टि तथा मूल तत्व को समझते हुअे मंडलों के सदस्यों को जीवनकला का अभ्यास हो। गांधीजी प्रथम से ही अपने सारे आन्दोलन में अिस पहलू पर जोर देते रहे हैं। अुनका यह आग्रह अितना व्यापक रहा कि अुन्होंने १९२१ में कांग्रेस द्वारा आजादी की प्राप्ति का जो आन्दोलन चलवाया अुसका नाम अुन्होंने आत्मशुद्धि का आन्दोलन ही रखा था, लेकिन संघ के लिये यह संभव तथा व्यावहारिक नहीं होगा कि वह लाखों सदस्यों के शिक्षण के लिये देश भर में स्थायी विद्यालय खोले। और न यह भी संभव तथा व्यवहारिक है कि सदस्य अपने काम छोड कर काफी दिन विद्यालय में आकर शिक्षण ले सकें। अिसलिये अिस अुद्देश्य की सिद्धि के लिये संघ ने अस्थायी कताओी शिविरों का आयोजन किया है, और यह काम खास महत्व का होने के कारण अिसके लिये अेक स्वतंत्र विभाग का संगठन भी किया गया है। शिविरों का संचालन [illegible] जगहों पर होगा जहां पर कि कताओी मंडल अैसे शिविरों को

आमंत्रित करेंगे। अैसे आमंत्रणों की प्रेरणा चरखा संघ के कार्यकर्त तथा सहयोगी सेवक कताअी मंडलों में अुद्बोधित करने की चेष्टा करेंगे

शिविर प्रधानतः दो प्रकार के होंगे, अेक साधारण शिविर जिसमें तात्विक आधार तथा जीवनकला की दृष्टि मुख्य होगी। दूसरे किस्म के शिविरों में कताअी और बुनाअी आदि की कला का स्थान मुख्य रहेगा।

पहिले किस्म के शिविर तीन दिन तथा सात दिन के होंगे और दूसरे किस्म के शिविर अेक सप्ताह, दो सप्ताह तथा पांच सप्ताह के होंगे। अिन शिविरों में कताअी मंडलों के सदस्यों के अलावा अगर दूसरे लोग भी शामिल होना चाहेंगे तो अुन्हें भी आमंत्रित किया जावेगा, ताकि वे भी हमारी दृष्टि को ठीक से समझ सकें। अेक सप्ताह में बांस का चरखा बनाने का ज्ञान, दो सप्ताह में स्वावलंबी कताअी का ज्ञान और पांच सप्ताह में स्वावलंबी बुनाअी का सामान्य ज्ञान दिया जायगा अैसी योजना है। शिविर अैसे गांवों में होंगे जहां कि आबादी दो हजार से ज्यादा न हो। शिविरों के लिअे कोअी अलग स्थान की व्यवस्था नहीं की जायेगी। शिक्षार्थी और शिक्षक गांव के विभिन्न परिवारों में बंट कर अतिथि के रूप में रहेंगे और खुद नियमित रूप से कार्यक्रम में शामिल होते हुअे जिस परिवार में वे रहेंगे अुन्हें अपने साथ कार्यक्रम में शामिल करने की कोशिश करेंगे। अिस प्रकार वे गांव की आबादी के साथ घुल मिल कर समरस हो सकेंगे।

शिविरों के अलावा कुछ बडे संमेलनों को भी संगठित करने की आवश्यकता है। हमारी योजना के अनुसार कताअी मंडलों को स्वावलंबी तथा स्वयंपूर्ण होना है। अिसका मतलब यह नहीं कि कताअी मंडलों का आपस में कोअी संपर्क या सहयोग न हो या दुनिया के दूसरे लोगों से

संबंध न हो। बापूजी के स्वावलंबन का यह अर्थ नहीं है। स्वावलंबन की बात समझाते हुअे वे हमेशा यह चेतावनी देते रहे कि लोगों में कहीं अिसका भ्रम न हो जाय। वे कहते रहे हैं कि "अिसका (स्वावलंबन शब्द का) अनर्थ होना संभव है, अिसलिअे अिस चीज को अच्छी तरह समझ लेना चाहिये। "सेल्फ सफिशियन्सी" का अर्थ कूपमंडूकता नहीं, "सेल्फ सफिशिअेन्ट" याने "सेल्फ कन्टेंट", नहीं।" अर्थात परस्परावलंबन स्वावलंबन के अर्थशास्त्र और नीति शास्त्र के अन्तर्गत है। हमें सिर्फ अितना ही देखना है कि अिस परस्परावलंबन के बहाने केन्द्रीय अर्थशास्त्रियों ने जनता को अैसे भूलभुलैया में डाला है कि कौन क्या करता है, किधर से क्या आता है और किधर क्या जाता है अिसका अुन्हें पता ही नहीं चलता। और अिसी तरह केन्द्रीय विशेषज्ञ अुनका हमेशा शोषण करते रहे। यह बात संसार से मिट जाय और जनता स्वावलंबन को केन्द्र कर अूपरी बातों के लिअे परस्परावलंबी हो।

अिस अुद्देश्य की सिद्धि के लिअे यह आवश्यक है कि विभिन्न कताअी मंडल के सदस्य तथा कार्यकर्ता समय समय पर संमेलन कर आपस में संपर्क बढ़ावें तथा अनुभव और विचार-विनिमय करें। अिसलिये संघ की ओर से यह चेष्टा की जा रही है कि कताअी मंडलों के क्षेत्रीय, जिला, प्रान्तीय तथा अखिल भारतीय संमेलन हों और अैसे संमेलनों का स्वरूप भी अुसी तरह गांव के लोगों के घर में अतिथि बन कर हो जिस तरह शिविर के लिअे आयोजन किया गया है।

विद्यालय :—यह स्पष्ट है कि शिविरों के जरिये हम केवल जानकारी ही दे सकते हैं। गहराअी के अनुभव तथा अभ्यास

के लिये स्थायी विद्यालयों की आवश्यकता है। पहिले चरखा संघ के अंतर्गत प्रायः अेक ही प्रकार के विद्यालय थे, तथा अुसमें कारीगिरी का ही ध्यान रखा जाता था। लेकिन सन् ४५ में जब चरखा संघ की नयी नीति का प्रस्ताव हुआ, तब यह महसूस किया गया कि अिस काम के लिये कार्यकर्ताओं का जीवन तथा दृष्टि खास तौर से तयार करने की आवश्यकता है। अिसलिये गांधीजी के सुझावानुसार चरखा संघ ने जो नवसंस्करण का प्रस्ताव किया अुसमें विद्यालयों के पुनःसंगठन की बात को मुख्य महत्व दिया गया। और अिस अुद्देश्य से अुस समय अेक खास समिति बना कर खादी शिक्षा के बारे में विचार करने का निश्चय किया गया। गांधीजी ने कहा कि अधूरे अेकांगी शिक्षण से हमारा काम नहीं चल सकता है, अिसलिये विद्यालय में व्यावहारिक, तात्विक तथा नैतिक शिक्षण भरपूर दिये बिना कार्यकर्ता को काम पर नहीं लगाना चाहिये। समिति ने लगातार कअी दिन तक विचार करने के बाद चार साल के अवधि का अभ्यासक्रम तैयार करने की बात सोची और दो साल का अभ्यासक्रम भी बनाया। खादी विद्यालय का नाम बदल कर समग्र ग्राम सेवा विद्यालय रखा गया। लेकिन हमने जिस तरह अुस समय नयी दृष्टि की दिशा में और बातों में भी प्रगति नहीं की अुसी तरह विद्यालय का काम भी ठीक नहीं चल सका।

पिछले दो साल से चरखा संघ ने जब फिर नयी नीति पर निश्चित कदम अुठाया तो स्वाभाविकतः विद्यालयों के पुनःसंगठन की दिशा में जोर दिया गया और विद्यालयों में कताअी और बुनाअी के अलावा सफाअी विज्ञान, खेती और तात्विक-मीमांसा का शिक्षण शामिल किया गया। व्यावहारिक दृष्टि से कताअी और बुनाअी

की गहराअी को कायम रखते हुये जिससे अधिक करना भी संभव नहीं था। लेकिन सेवकों के सर्वांगीण विकास के लिये अितना बस नहीं है। अुन्हें तो ग्राम समस्या के सभी विषयों में पारंगत बनना है, तभी वे देश भर में फैले हुअे कताअी मंडलों को सर्वांगीण दृष्टि से स्वयंपूर्ण बनाने में मार्गदर्शन कर सकेंगे। साथ ही यह भी महसूस किया गया कि सर्वांगीण शिक्षण के साथ साथ कारीगिरी की कला में विशेष गहराअी से कुशल बनाने में अत्यधिक समय लगेगा, और अभ्यासक्रम की अवधि बढानी होगी। दूसरी बात यह थी कि यद्यपि चरखा संघ तथा अन्य ग्रामसेवकों के लिये सारी बात की आवश्यकता है तथापि सरकारी, तथा अन्य राष्ट्रीय संस्थाओं को चरखा संघ से अैसी अपेक्षा है कि संघ अुनके सेवकों के लिये सिर्फ कताअी और बुनाअी के काम में कुशल बना दे। शुरू में दोनों प्रकार के अभ्यासक्रम खादी विद्यालय में रखे गये। साल भर के अनुभव से यह महसूस हुआ कि अिस तरह से विद्यालय के वातावरण में अेकरसता लाना मुश्किल है।

अैसे अनुभव के बाद अब संघ ने तीन प्रकार के विद्यालय चलाने का निश्चय किया है—(१) खादी कारीगिरी विद्यालय, (२) खादी कार्यकर्ता विद्यालय और (३) खादी गुरुकुल।

(१) खादी कारीगिरी विद्यालय अिस विद्यालय में मुख्यतः कताअी, बुनाअी और सरंजाम की कारीगिरी सिखाअी जायेगी, लेकिन जीवन, तात्त्विक ज्ञान तथा अन्य विषय जिउन आज तक खादी विद्यालय में सिखाया जाते रहे अुतने सिखाये जायेंगे, ताकि कारीगिरी सीखने वालों की दृष्टि स्पष्ट हो। विद्यालय में हर कला के लिये दो दो विभाग रहेंगे। अेक सामान्य ज्ञान और दूसरा विशेष ज्ञान का। शिक्षार्थी आवश्यकतानुसार अपना अपना विभाग चुन लेंगे।

(२) खादी कार्यकर्ता विद्यालय— अिस विद्यालय में कृषि, सफाअी विज्ञान, आहार विज्ञान, कताअी, बुनाअी, सरंजाम, ग्रामसमस्या तथा अन्य आवश्यक विषय रहेंगे। अिस विद्यालय का कारीगिरी अभ्यासक्रम वस्त्र-स्वावलंबन की दृष्टि से रखा जायगा।

(३) खादी गुरुकुल— अिसमें किशोर बालकों को ही भर्ती किया जायगा और अुन्हें सरंजाम, कताअी, बुनाअी के साथ साथ अन्य सभी साधारण विषयों की भी शिक्षा दी जावेगी। अैसे विद्यालयों में अभ्यास-क्रम की बुनियाद कृषि और बागवानी रहेगी। अभ्यासक्रम का अवधि चार साल का होगा।

कपास समिति :— खादीकाम की जड कपास है। अतः कपास की समस्या पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

अगर हिन्दुस्थान की आम जनता को स्वावलंबी बनाना है तो देश के कोने-कोने में कपास पैदा हो अिसकी व्यवस्था करनी होगी। पाहिले भारत में अैसा ही होता था। दुर्भाग्य से मिलों के आने से सरकार तथा शहर के लोगों की दृष्टि में बहुत फरक हो गया है। वे कपास में जो-जो प्रयोग करते हैं वे सारे मिल की दृष्टि से करते हैं। नतीजा यह हुआ कि खादी के लायक जो कपास पैदा होती थी वह सब देश से समाप्त हो गअी है। और आज अैसी स्थिति होती जा रही है कि साधारण लोगों को कपास मिलना भी मुश्किल है।

अिस समस्या को हल करने के लिये चरखा संघ ने कपास की खोज तथा विस्तार के लिये अेक अलग समिति कायम की है। अिस

विभाग का काम हाल ही में शुरू हुआ है और अिसकी गहराअी में दिलचस्पी लेनेवाले "कपास की समस्या, खादी की दृष्टि से" नामक शीर्षक वाली पुस्तक देख सकते हैं।

यदि खादी की दृष्टि से कपास की समस्या को हम हल नहीं कर सकेंगे तो हमारे सारे कार्यक्रम बेपेंदी के हो जावेंगे। जिस पौधे की जड़ ही कमजोर हो वह कैसे पनप सकता है। अिसलिये भविष्य में अिस दिशा में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

सरंजाम सुधार :—देश की मौजूदा पूंजीवादी सभ्यता के स्थान पर सिर्फ भावना और श्रमवृत्ति कायम करने से ही काम न हो सकेगा। साथ-साथ व्यावहारिक आधार भी लेना होगा। जनता चाहे जितनी पूंजीवाद की विरोधी तथा श्रमवाद की कायल हो, स्वावलंबी बनने के लिये अगर अितना अधिक श्रम करना पड़े कि अुसकी सामाजिक वृत्ति तथा सांस्कृतिक और बौद्धिक प्रवृत्तियों के विकास को समय ही न मिले, तो वे अैसे स्वावलंबन का काम धीरे-धीरे छोड़ देंगे। यद्यपि आदर्श की दृष्टि से मनुष्य को सहूलियत का मोह नहीं करना चाहिये, फिर भी जब तक मानव समाज आदर्श स्थिति पर नहीं पहुँचता तब तक सहूलियत की कुछ-न-कुछ तृष्णा जनता में रहेगी ही। अिसलिये जहाँ चरखा संघ का काम आम लोगों को आजादी का होश दिला कर अुनमें स्वावलंबन की मनोवृत्ति पैदा करना है, वहाँ संघ की यह भी जिम्मेदारी है कि वे अुत्पादन के औजारों का अैसा सुधार करें कि जिससे जनता की भौतिक आवश्यकता की पूर्ति में केन्द्रीय पूंजी तथा व्यवस्था का भरोसा न करते

हुए अपना श्रम तथा समय कम से कम खर्च करके जिन्दगी की अन्य प्रवृत्तियों की पूर्ति के लिये अुसे समुचित समय मिल सके। अिस दृष्टि से चरखा संघ सरंजाम सुधार की ओर खास ध्यान दे रहा है। फलस्वरूप दुबटा कताओी, धुनाओी का आसान मोढिया आदि कओी अैसी चीजों का अविष्कार किया गया है कि जिससे जनता की सहूलियत की तृष्णा भी शांत हो सके, और साथ-साथ अुसका समय भी बच सके। अिसके लिये संघ ने अलग विभाग खोल रखा है जो सारे हिंदुस्थान में घूम कर विभिन्न स्थान के यांत्रिक विशेषज्ञों से परामर्श भी करता रहता है और हाल में अिस विभाग के कुछ सदस्यों को जापान भेजने का भी निश्चय किया है।

अिस प्रकार नयी योजना द्वारा चरखा संघ जनता से ओत-प्रोत होकर नयी आर्थिक तथा सामाजिक क्रांति की चेष्टा के लिये अुन्हें तैयार करने की कोशिश में लग रहा है। डेढ साल के काम से संघ को यह अनुभव हुआ है कि मुल्क की आम जनता में अिस दिशा में काफी दिलचस्पी है। आवश्यकता अिस बात की है कि हमारे साथ लाखों की तादाद में बापू की पुकार के अनुसार नव-जवान शामिल होकर अिस दिलचस्पी को मूर्तिमान बनावें।

वैसे सदियों से खादी हमारे देश में चलती रही है। आजतक वह किसी-किसी प्रान्त में मिटी नहीं है। लेकिन हमें जो फैलाना है, वह है "बापू की खादी।" हमें आशा है कि जनता अिस काम में सफल होगी। युगपुरुष द्वारा युगसमस्या के समाधान की वाणी विफल नहीं होती।

अगर भारत उसे नहीं अपनायेगा तो संसार के किसी न-किसी कोने से वह उभरेगी ही। यदि वैसा हुआ तो भारत की आनेवाली पीढ़ी हमारे नाम से शर्मिंदा होती रहेगी।